आज का पुरुषार्थ 9 August 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"आज तपस्या करनी है.. सम्पूर्ण पवित्रता को अपनाने की "*

हम सभी तपस्या के मार्ग पर अग्रसर है। हमारी तपस्या **राजयोग की तपस्या है।** राजयोग में हमारा direct connection है supreme से, **परम सत्ता से, निराकार सर्वशक्तिमान से।**

उससे ही हमें शक्तियाँ मिलती है। जितना हमारा चित्त **मन बुद्धि एकाग्र** होंगे उतनी ही हम उनसे अधिक शक्तियाँ ले सकेंगे। अपने मन को परम आनन्द की अनुभूतियों में रख सकेंगे।

हम सभी को इस तपस्या का परम आनन्द लेने के लिए **प्युरीटी** परम आवश्यक है। पवित्रता, ब्रह्मचर्य। **ब्रह्मचर्य** को शास्त्रों में, वेदों में बहुत बड़ी तपस्या माना जाता है।

परन्तु हमारी तपस्या ऐसी तपस्या नहीं है। हमारी ब्रह्मचर्य की तपस्या बहुत आनन्दकारी है। उधर क्या था कि **ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करा दी**, ब्रह्मचर्य में रहना है।

किसी के संस्कार **ब्रह्मचर्य** के होते थे, वह सफल हो जाते है। और किसी के नहीं होते है तो वह सफल नहीं होते। इसलिए अनेक संन्यासी, महात्मा भी इस पथ से विमुख हो गये।

परन्तु सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिए, शक्तियाँ प्राप्त करने के लिए, **योग साधना** को सफल करने के लिए ब्रह्मचर्य और फिर सम्पूर्ण पवित्रता, फिर सम्पूर्ण **निर्विकारी स्थिति** तक पहुँचना परम आवश्यक है।

क्योंकि जिससे हम योग लगाते है वह **परम पवित्र है**, absolutely pure, holy, viceless, पवित्रता के सागर है । जिनसे योग लगाकर सभी आत्मायें पवित्र बन जाती है।

तो जब उनके साथ हमें चलना है, **उनसे बुद्धि को connect करना है**, तो हमारी बुद्धि भी सम्पूर्ण पवित्र होनी ही चाहिए।

इसलिए यह देखा जाता है, जितनी जितनी जिसमें **प्युरीटी** होती है, उतना उतना ही वह **योग** में सफल है।

हमें अपनी प्युरीटी को हटपूर्वक नहीं, योग साधना के बल से **नेचुरल** रुप देना है। ... इसमें पहली साधना है " **देह से न्यारे होने का अभ्यास** "

अब जो शास्त्रों के अनुसार ब्रह्मचर्य के पालन अपनाते है, वह कोई **अशरीरी** होने का या soul-conscious होने का अभ्यास नहीं करते है। इसमें एक कमी रह जाती है।

आत्मिक दृष्टि का भी अभ्यास नहीं करते। वह आँखे बंद कर लेते है।

पर बाबा ने हमें सिखाया आँखे बंद नहीं करनी है, तुम्हे आँखे तो खोलनी है। बंद तो पहले से ही थी। अज्ञान में आँखे बंद हो गई थी। अब इन आँखो से निराकार आत्मा को देखो।

तो जब अशरीरीपन और **आत्मिक दृष्टि का अभ्यास** होने लगता है, तो प्युरीटी बहुत natural हो जाती है।

और दुसरी बात .. हमें बहुत गहराई से realise करना है कि ...

" मैं आत्मा परम पवित्र हूँ "

स्वीकार करे अपने इस क्वालिटी को ...

"**Purity is My Original Nature**"... मैं सम्पूर्ण पवित्र हूँ। यह विकार तो बाद में आये। बाकी मेरा मूल स्वरुप सम्पूर्ण पवित्र है।

यही हमारी तपस्या है। हटपूर्वक कुछ करना, यह हमारी तपस्या नहीं है। जड़ी-बूटियाँ खाकर **कर्मेन्द्रियों को शीतल कर लेना**, वह भी हमारी तपस्या नहीं है।

हम तो **स्वराज्यधिकारी** बनकर कर्मेन्द्रियों के राजा बन जाते है, उनके मालिक बन जाते है।

तो हम यह तीन साधनायें करेंगे ... सोल कॉन्शास होने की। और उसके लिए

" मैं आत्मा स्वराज्य अधिकारी हूँ .. मन-बुद्धि की मालिक हूँ .. कर्मेन्द्रियों की मालिक हूँ .. संस्कारों की मालिक हूँ "

बहुत गहरी फीलिंग .. यह हमें करनी है। और फिर ...

" यह सभी आत्मायें है .. यह देह वस्त्र है "

.. सबका कैसा भी वस्त्र हो, हमें आत्मिक दृष्टि रखनी है।

तो इस तरह हम यदि साधना को बढ़ायेंगे तो हमारी पवित्रता की साधना सरल हो जायेगी, आनन्दकारी हो जायेगी।

तो योग के साधना के साथ साथ हमें **पवित्रता** की साधना भी हमें चालु रखनी है। कहीं ऐसा न हो कि उधर हम योग से शक्तियाँ लेते रहे और इधर व्यर्थ संकल्पों में शक्तियाँ खोते रहे।

तो आओ हम सभी सम्पूर्ण पवित्र बनकर योग का परम आनन्द ले।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org